सफलता की कहानी किशोर सिंह की जुबानी

जोधपुर जिले के कानसिंह की सीड़ गांव के रहने वाले प्रगतिशील व सफल बकरी पालक किशोर सिंह राजपूत (57) अपने बचपन से बकरी, भेड़ चराने के कार्य के साथ ही कृषि का कार्य भी करते रहे हैं। पहले वह घर की आवश्यकतानुसार 10–15 बकरी रखते थे और अपनी 180 बीघा असंचिति (बारानी) कृषि भूमि पर कृषि कार्य करते थे। कृषि वर्षा पर ही निर्भर थी जिससे अधिक पैदावार नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर थी आज से 5 वर्ष पहले गांव कानसिह की सीड़ गांव में वेटेरनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना के प्रशिक्षण कैम्प में किशोर सिंह आये और परियोजना से प्रभावित होकर बकरी पालन को ही अपना व्यवसाय बनाने की ठान ली। किशोरसिंह बकरी परियोजना के रजिस्टर्ड मैम्बर बने। परियोजना की और से उन्हें मारवाड़ी नस्ल का बकरा दिया गया। आज उनके पास मारवाड़ी

नस्ल की 110 बकरियां है जिनके लिए किशोर सिंह को वेटेरनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना की तरफ से मारवाड़ी नस्ल का बकरा दिया गया है। किशोरसिंह परियोजना की तरफ से प्रशिक्षण शिविर में समय–समय पर बकरी पालन के बारे में जानकारी लेते रहते हैं और कृमिनाशक दवा व बकरियों का टीकाकरण भी समय–समय पर कराते रहते हैं। किशोरसिह के पास जो 180 बीघा असंचिति (बारानी) कृषि भूमि है उस पर वह खेती नहीं करके बकरी पालन का काम करते हैं। उसमें 80 खेजड़ी व पेड़ हैं, व 50 बैर के पेड़ हैं। इन पेड़ों को वर्ष में एक बार कटिंग (छांगते) करते है। खेजड़ी के व बेर के पत्ते बकरियों का पसंदीदा भोजन है। जो वर्ष भर का एक बार में इकठ्ठा कर लेते है। इस चारे से बकरियां स्वस्थ रहती है। किशोर सिंह ने बकरियों को रखने के लिए आधुनिक तरह के बाड़े व शेड़ बना रखे हैं, साफ पानी के लिए खालीयां बना रखी है। बकरी पालन व साफ सफाई में उनका

पूरा परिवार साथ देता है। किशोरसिंह ने बकरी के बालों को कातकर चारपाईयां भी बना रखी है। किशोरसिंह ने बताया है कि उक्त बकरी परियोजना से जुड़ने से उसे काफी लाभ हुआ है। बकरियों की मृत्यु दर में काफी गिरावट आयी है। जिसकी वजह से आय भी बढ़ी है। वर्ष भर में 90 से 100 के बीच बकरियां व बकरे बेचकर किशोर सिंह अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। किशोरसिंह ने अजोला फार्मिग करने में रूचि दिखाई हैं। किशोरसिंह समस्त गांव वालों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हुए है।

मारवाड़ी फिल्ड यूनिट राजुवास, बीकानेर